CBSE Test Paper 04
अपठित काव्यांश

1. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर सम्बंधित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**
   बापू! तुमने होम दिया जिसके निमित्त अपने को,
   अर्पित सारी भक्ति हमारी उस पवित्र सपने को।
   क्षमा, शांति, निर्भीक प्रेम को शतशः प्यार हमारा,
   उगा गए तुम बीज, सींचने का अधिकार हमारा
   अखिल विश्व के शांति-यज्ञ में निर्भय हमीं लगेंगे,
   आएगा आकाश हाथ में, सारी रात जगेंगे।
   बड़े-बड़े जो वृक्ष तुम्हारे उपवन में थे,
   बापू! अब वे उतने बड़े नहीं लगते हैं।
   सभी इँठ हो गए और कुछ नहीं लगते हैं,
   जो अपनी स्थितियों में खड़े नहीं लगते हैं।
   कुर्ता-टोपी फेंक कमर में भले बाँध लो,
   पाँच हाथ की धोती घुटनों से ऊपर तक,
   अथवा गांधी बनने के आकुल प्रयास में
   आगे के दो दाँत डॉक्टर से तुड़वा लो।
   पर, इतने से मूर्तिमान गांधीत्व न होता,
   यह तो गांधी का विरूपतृम व्यंग्य-चित्र है।
   गांधी तब तक नहीं, प्राण में बहने वाली
   वायु ने जब तक गंधमुक्त सबसे अलिप्त है।
   गांधी तब तक नहीं, तुम्हारा शोणित जब तक
   नहीं शुद्ध गैरेय! सभी के सदृश लाल है।

   i. कवि ने किसके प्रति सम्मान व्यक्त किया है और क्यों?
   ii. “बापू! अब वे उतने बड़े नहीं लगते हैं।" पंक्ति के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?
   iii. कवि ने गांधी के बाहरी स्वरूप को व्यंग्य-चित्र क्यों कहा है?

2. **निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर सम्बंधित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए-**
   मत हँसो किसी को गिरते देख कभी तुम।
   मत समझो यह कि गिरेंगे कभी नहीं हम।।
   उस गिरे हुए के पास दौड़कर जाओ।
   सादर देकर अवलंब तुरंत उठाओ।।

जो झटपट तुमने नहीं उठायी उसको।
फिर कौन उठाएगा, गिरने पर तुमको।।
मत करो घृणा तुम दोनों से, दुखियों से।
उनका हक है सुख पाना ही सुखियों से।।
दीन-दुखियों को कभी न भूल सताओ।
प्रत्युत तुम उनके परम सुहृद बन जाओ।।
सम्मान-प्रेम-हित साधन में जुट जाओ।
दे तन-मन-धने उनका सब कष्ट मिटाओ।।
जो उन्हें तुम्हारा नहीं सहारा होगा।
तो दुर्दिन में फिर कौन तुम्हारा होगा।
जैसा बोवोगे बीज मिलेगा वैसा
जैसा करता जो, फूल पाता वैसा
दु:ख दो न किसी को करो न कभी बुराई।
सुख चाहो तो नित करते रहो भलाई।

i. “मत समझो यह कि गिरेंगे कभी नहीं हम"- पंक्ति से कवि का क्या आशय है?
ii. कवि ने दीन-दुखियों के साथ कैसा व्यवहार करने की बात कही है?
iii. प्रस्तुत काव्यांश का तर्कसहित उचित शीर्षक बताइए।

CBSE Test Paper 04
अपठित काव्यांश

Answer

1. i. प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने महात्मा गांधी के प्रति सम्मान व्यक्त किया है, क्योंकि उनके व्यक्तित्व में क्षमा, शांति, निर्भीकता और प्रेम जैसे सद्गुणों का समावेश था। अपने इन्हीं गुणों के बल पर गांधीजी ने विश्व की अगुवाई (मार्गदर्शन) की थी।
   ii. प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से कवि ने अपने मन की पीड़ा व्यक्त की है। वह कहना चाहता है कि बापू ने अपने जीवन-चरित्र के माध्यम से हमें महान् सिद्धांतों से अवगत कराया था, परंतु अब वे उतने बड़े नहीं लगते। आज परिस्थितियों में काफ़ी बदलाव आ गया है, जिसके कारण हमारे मानवीय मूल्य भी बदल रहे हैं।
   iii. कवि ने गांधीजी के बाहरी स्वरूप को व्यंग्य-चित्र इसलिए कहा है, क्योंकि उसका मानना है कि मात्र बाहरी रूप से गांधीजी के समान लगने से, उनकी तरह धोती बाँधने से और आगे के दो दाँत तुड़वाने से कोई व्यक्ति गांधी नहीं बन सकता। गांधीवादी विचारधारा अपनाने के लिए हमें गांधीजी के स्वरूप को नहीं वरन् उनके सिद्धांतों को भी अपनाना होगा।
2. i. इस पंक्ति का आशय यह है कि यदि कभी कोई व्यक्ति गिर जाता है, तो हम उसका मज़ाक बनाते रहते हैं और यह भूल जाते हैं कि कभी हम भी इसी प्रकार गिर सकते हैं। कवि कहना चाहता है कि कभी भी गिर जाने वाले व्यक्ति का मज़ाक बनाने के स्थान पर उसकी सहायता करनी चाहिए। यदि आज हम उस पर हँसेंगे तो कल हमारे साथ भी ऐसा हो सकता है।
   ii. कवि ने कहा है कि हमें दीन-दुःखियों से घृणा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उनका यह हक है कि सुखी लोग उसके दुःखों को दूर करते हुए उसे सुख प्रदान करें। दीन-दुःखियों को हमें कभी-भी सताना नहीं चाहिए, बल्कि उनके मित्र बनकर उनके दुःख दूर करने में सहायता करनी चाहिए।
   iii. प्रस्तुत काव्यांश में कवि के अनुसार यदि हम किसी व्यक्ति के गिर जाने पर उसकी मदद करने की बजाय उसका मज़ाक उड़ाते हैं या किसी दीन-दुःखियों की स्थिति को देखकर उसे सताते हैं, तो ऐसी स्थिति में जब हम होंगे, तब लोग हमारा भी मज़ाक उड़ाएँगे और हमें सताएँगे। अतः इस काव्यांश का उचित शीर्षक 'जैसी करनी वैसी भरनी" होना चाहिए।